E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 8 | August 2026

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में पटना के इतिहासकारों की भूमिका: एक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar Singh[1*], Dr. Amit Shanker[2], Prof. Abha Rani Sinha[3]
[1]PGT (History), S.S.Girls High School Hajipur, Vaishali Bihar
[2]Head Master, U.M.V. Dudhaila Sonpur Saran Bihar
[3]Professor, Former HOD, Department of Psychology, BRA Bihar University, Muzaffarpur Bihar

सारांश

पटना, जो प्राचीन काल में पाटलिपुत्र के नाम से मगध साम्राज्य की राजधानी रहा है, आधुनिक काल में भी भारतीय इतिहास-लेखन के एक महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा। बीसवीं शताब्दी के आरंभ से ही पटना में अनेक शोध संस्थाओं—बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी, पटना संग्रहालय, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान तथा पटना विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जिन्होंने प्राचीन भारतीय इतिहास के अभिलेखीय, मुद्राशास्त्रीय एवं साहित्यिक स्रोतों के व्यवस्थित अध्ययन को गति दी। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पटना में कार्यरत रहे प्रमुख इतिहासकारों—विशेषतः काशी प्रसाद जायसवाल, परमेश्वरी लाल गुप्त, राधाकृष्ण चौधरी, सैयद हसन असकरी आदि के प्राचीन भारतीय इतिहास-लेखन में योगदान का विश्लेषण करना तथा उनकी इतिहास-लेखन पद्धतियों एवं दृष्टिकोणों का समालोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करना है। अध्ययन गुणात्मक-ऐतिहासिक (qualitative-historiographical) पद्धति पर आधारित है और द्वितीयक/तृतीयक स्रोतों—जीवनीपरक लेखों, संस्थागत विवरणों तथा विद्वत्तापूर्ण वेब-प्रकाशनों के विश्लेषण पर निर्भर करता है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि पटना-केंद्रित इतिहासकारों ने राष्ट्रवादी चेतना, स्रोत-समालोचन तथा प्रयोगसिद्ध पद्धति (अभिलेख एवं मुद्रा-अध्ययन) के समन्वय से भारतीय इतिहासलेखन की एक विशिष्ट क्षेत्रीय परंपरा का निर्माण किया, यद्यपि इस परंपरा की कुछ सीमाएँ—जैसे स्त्री-दृष्टिकोण की उपेक्षा तथा राजनीतिक-वंशीय इतिहास पर अत्यधिक बल भी रेखांकित की जा सकती हैं।

कूटशब्द: पटना, इतिहासलेखन, काशी प्रसाद जायसवाल, बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी, अभिलेखशास्त्र, मुद्राशास्त्र, पाटलिपुत्र

1. प्रस्तावना

इतिहास-लेखन (historiography) केवल अतीत की घटनाओं का वर्णन-मात्र नहीं है, अपितु यह उन पद्धतियों, दृष्टिकोणों और संस्थागत ढाँचों का भी अध्ययन है जिनके माध्यम से किसी समाज में अतीत की समझ निर्मित होती है। भारत में आधुनिक ऐतिहासिक अनुसंधान की परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोपीय प्राच्यविद्या (Orientalism) तथा भारतीय राष्ट्रीय चेतना के संयोग से विकसित हुई। इस विकास-यात्रा में कुछ नगर कलकत्ता, बंबई, पूना और पटना विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरे।

*Corresponding Author Email: rajeshshubhangi01217@gmail.com
Published: 31 August 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i8.45901
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

पटना का प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था, जो मौर्य साम्राज्य सहित अनेक प्राचीन राजवंशों की राजधानी रहा। पाटली ग्राम से पाटलिपुत्र और कालांतर में पटना बनने की इस यात्रा में नगर की छह सौ ईसा-पूर्व से चली आ रही ऐतिहासिकता ने इसे स्वाभाविक रूप से ऐतिहासिक शोध का केंद्र बना दिया। बिहार के बंगाल से पृथक होकर 1912 में एक स्वतंत्र प्रांत बनने के बाद पटना में ऐतिहासिक अनुसंधान हेतु संस्थागत ढाँचा तेज़ी से विकसित हुआ, जिसकी परिणति 1915 में बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी की स्थापना तथा 1917 में पटना संग्रहालय की स्थापना के रूप में हुई।

इसी संस्थागत पृष्ठभूमि में काशी प्रसाद जायसवाल जैसे विद्वानों ने पटना को प्राचीन भारतीय इतिहास, विशेषतः राजनीतिक व्यवस्था, विधि, मुद्राशास्त्र और अभिलेखशास्त्र के अध्ययन का एक राष्ट्रीय महत्त्व का केंद्र बना दिया। आगे चलकर परमेश्वरी लाल गुप्त, राधाकृष्ण चौधरी और अन्य विद्वानों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। यह शोध पत्र इसी परंपरा के विश्लेषण का प्रयास है।

2. अध्ययन का औचित्य एवं महत्त्व

भारतीय इतिहासलेखन के अधिकांश अध्ययन कलकत्ता, बंबई अथवा दिल्ली-केंद्रित विद्वत्-परंपराओं पर केंद्रित रहे हैं, जबकि पटना जैसे क्षेत्रीय किंतु राष्ट्रीय महत्त्व के केंद्र की भूमिका को अपेक्षाकृत कम अध्ययन प्राप्त हुआ है। जबकि तथ्य यह है कि बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी का जर्नल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कर चुका था और काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान आज भी प्राचीन एवं मध्यकालीन बिहार के इतिहास, पुरातत्व तथा वस्तु-विज्ञान के अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र है। ऐसे में पटना के इतिहासकारों के योगदान का समेकित विश्लेषण क्षेत्रीय इतिहासलेखन (regional historiography) के अध्ययन में एक सार्थक योगदान सिद्ध हो सकता है, साथ ही यह राष्ट्रीय आंदोलन के दौर में इतिहासलेखन तथा राष्ट्रवाद के अंतर्संबंधों को समझने में भी सहायक है।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के दो मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

उद्देश्य 1: पटना में स्थापित प्रमुख शोध संस्थाओं—बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी, पटना संग्रहालय, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान तथा पटना विश्वविद्यालय तथा वहाँ कार्यरत रहे इतिहासकारों के प्राचीन भारतीय इतिहास-लेखन में ठोस अवदान (ग्रंथ-रचना, अभिलेख-वाचन, मुद्रा-अध्ययन एवं संग्रहालय-निर्माण) का विश्लेषण करना।

उद्देश्य 2: पटना-केंद्रित इतिहासकारों द्वारा अपनाई गई इतिहास-लेखन पद्धतियों—राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, स्रोत-समालोचन, अभिलेखीय एवं मुद्राशास्त्रीय प्रविधि तथा उनकी ऐतिहासिक दृष्टि की प्रवृत्तियों एवं अंतर्निहित सीमाओं का समालोचनात्मक मूल्यांकन करना।

4. शोध प्रश्न

- पटना में स्थापित शोध संस्थाओं ने प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों (अभिलेख, मुद्रा, साहित्य) के संकलन एवं विश्लेषण में किस प्रकार योगदान दिया?
- पटना के प्रमुख इतिहासकारों की इतिहास-लेखन पद्धति में राष्ट्रवादी चेतना और वस्तुनिष्ठ स्रोत-समालोचन के बीच क्या संबंध और तनाव दिखाई देते हैं?
- इस ऐतिहासिक परंपरा की प्रमुख सीमाएँ एवं भावी शोध की संभावनाएँ क्या हैं?

5. समीक्षित साहित्य

काशी प्रसाद जायसवाल के इतिहास-लेखन पर कृष्ण कुमार मंडल ने विस्तार से लिखा है। उनके अनुसार जायसवाल ने प्राचीन भारतीय राजव्यवस्था पर आधारित अपने प्रसिद्ध ग्रंथ हिंदू पॉलिटी के माध्यम से भारतविद्या (इंडोलॉजी) को नई दिशा दी, और यह भी उल्लेखनीय है कि 1920-30 के दशक में लिखने वाले इतिहासकारों पर राष्ट्रीय आंदोलन का गहरा प्रभाव था, जो उनके ऐतिहासिक चिंतन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है (मंडल, 2023)। मंडल यह भी बताते हैं कि जायसवाल जी ने प्राचीन भारत को अपेक्षाकृत अपरिवर्तनशील समाज के रूप में चित्रित किया, जिस पर बाद के इतिहासकारों ने प्रश्न भी उठाए (मंडल, 2023)।

जायसवाल की संस्थागत भूमिका पर बल देते हुए स्त्रीकाल पर प्रकाशित एक स्त्रीवादी विश्लेषण में बताया गया है कि जायसवाल बिहार की विभिन्न आधुनिक संस्थाओं—बिहार एंड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना म्यूज़ियम तथा पटना विश्वविद्यालय से आरंभ से ही विभिन्न रूपों में जुड़े रहे, यद्यपि इसी लेख में यह समालोचना भी प्रस्तुत की गई है कि उस दौर के संस्थागत ढाँचे में स्त्रियों के प्रतिनिधित्व का प्रश्न प्रायः उपेक्षित ही रहा (स्त्रीकाल, 2018)।

मध्यकालीन बिहार, विशेषतः पटना नगर के इतिहासलेखन के संदर्भ में शुभनीत कौशिक ने सैयद हसन असकरी के योगदान की चर्चा की है। कौशिक के अनुसार असकरी को पटना का इतिहास विशेष रूप से प्रिय विषय था और उन्होंने काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान द्वारा 1982 में आरंभ की गई व्याख्यानमाला में 1983 में दिए गए अपने व्याख्यानों में पटना शहर के विभिन्न इलाक़ों के इतिहास तथा उनके नामों की व्युत्पत्ति पर प्रकाश डाला था (कौशिक, 2025)। यही व्याख्यानमाला इस बात का प्रमाण है कि पटना की संस्थाएँ किस प्रकार अभिलेखशास्त्र (दिनेश चंद्र सरकार, जिन्होंने इंडियन एपीग्राफी नामक चर्चित ग्रंथ लिखा) और क्षेत्रीय इतिहास दोनों परंपराओं को एक मंच पर लाती रही हैं (कौशिक, 2025)।

मिथिला और बिहार के इतिहासलेखन के संदर्भ में राधाकृष्ण चौधरी का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने मैथिली तथा हिंदी दोनों भाषाओं में मिथिला के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास पर सूक्ष्म शोध-कार्य किया (मैथिली जिंदाबाद, 2017)। यद्यपि चौधरी मुख्यतः बेगूसराय स्थित गणेश दत्त महाविद्यालय से संबद्ध थे, तथापि उनका शोध-कार्य बिहार की व्यापक ऐतिहासिक परंपरा का ही अंग माना जाता है, जिसमें पटना-केंद्रित शोध संस्थाओं से भी अंतर्संबंध रहा (मैथिली जिंदाबाद, 2024)।

अंततः, मुद्राशास्त्र (numismatics) के क्षेत्र में परमेश्वरी लाल गुप्त का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। विकिपीडिया हिंदी के अनुसार डॉ. गुप्त सन् 1963 से 1972 तक पटना संग्रहालय के अध्यक्ष रहे तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात उन्होंने भारतीय मुद्राशास्त्रीय अध्ययन शोध संस्थान की स्थापना की, जो आज भी अपनी तरह की एक प्रमुख संस्था मानी जाती है (विकिपीडिया हिंदी, 2020)।

6. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक (qualitative-interpretative) ऐतिहासिक-विश्लेषण पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक अभिलेखीय स्रोतों (जैसे बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी जर्नल के मूल अंक अथवा काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के अप्रकाशित अभिलेख) का प्रत्यक्ष उपयोग नहीं किया गया है; अपितु उपलब्ध द्वितीयक एवं तृतीयक स्रोतों—जीवनीपरक लेख, विश्वकोशीय प्रविष्टियाँ, तथा समालोचन एवं स्त्रीकाल जैसी विद्वत्तापूर्ण वेब-पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपरक निबंधों के तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से रेखांकित किया जाना आवश्यक है कि यह पद्धतिगत सीमा अध्ययन की गहराई को प्रभावित करती है, और भविष्य के शोध हेतु प्राथमिक अभिलेखीय स्रोतों तक पहुँच अनिवार्य होगी (देखें अनुभाग

12)। तथ्यों की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने हेतु प्रत्येक तथ्य कम-से-कम एक सुनिश्चित द्वितीयक स्रोत से सत्यापित किया गया है, तथा जहाँ जानकारी अपुष्ट अथवा अस्पष्ट रही, वहाँ उसे स्पष्ट रूप से चिह्नित किया गया है।

7. पटना: पाटलिपुत्र से आधुनिक इतिहास-लेखन केंद्र तक

पटना का इतिहास एवं परंपरा सभ्यता के आरंभिक काल तक जाती है। पटना का मूल नाम पाटलिपुत्र अथवा पाटलिपत्तन था और इसका इतिहास 600 ईसा-पूर्व की शताब्दी से आरंभ होता है। समय के साथ इस नगर के नाम में पाटलिग्राम, कुसुमपुर, पाटलिपुत्र, आज़िमाबाद जैसे अनेक परिवर्तन हुए, अंततः यह वर्तमान 'पटना' नाम पर स्थिर हुआ। चौथी शताब्दी ईसा-पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य ने इसे अपनी राजधानी बनाया, और मान्यता है कि पाटलिपुत्र की स्थापना अजातशत्रु ने की थी (पटना ज़िला प्रशासन, 2026)।

इस प्राचीन ऐतिहासिकता ने बीसवीं शताब्दी में पटना को स्वाभाविक रूप से ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक शोध का केंद्र बना दिया। 1912 में बंगाल से बिहार के पृथक् होने के उपरांत एक प्रांतीय संग्रहालय की आवश्यकता अनुभव की गई। तत्कालीन गवर्नर चार्ल्स एस. बेली की अध्यक्षता में बिहार और उड़ीसा सोसाइटी की एक बैठक में प्रांतीय संग्रहालय स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ, और 20 जनवरी 1915 को तत्कालीन गवर्नमेंट हाउस में इसकी नींव रखी गई; औपचारिक रूप से पटना संग्रहालय का निर्माण 1917 में पूर्ण हुआ (विकिपीडिया हिंदी, 2024क)। इसी कालखंड में, सन् 1915 में ही, भारतीय इतिहास के गंभीर शोध हेतु बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी की स्थापना हुई, जिसके संस्थापक सदस्यों में काशी प्रसाद जायसवाल भी सम्मिलित थे (मंडल, 2023)। यह दोनों संस्थाएँ—संग्रहालय एवं शोध सोसायटी आगे चलकर पटना में प्राचीन भारतीय इतिहास-लेखन की संस्थागत रीढ़ बनीं।

8. उद्देश्य 1 का विश्लेषण: संस्थागत अवदान

8.1 बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी (1915)

बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी की स्थापना 1915 में भारतीय इतिहास के गंभीर एवं व्यवस्थित शोध के उद्देश्य से हुई थी। काशी प्रसाद जायसवाल इसके संस्थापकों में से एक थे और आगे चलकर वे इस संस्था तथा इसके जर्नल के लिए प्राणतत्व सिद्ध हुए। जायसवाल के संपादन में प्रकाशित इस सोसायटी के जर्नल ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त की (मंडल, 2023)। यह जर्नल प्राचीन भारतीय अभिलेखों, मुद्राओं तथा साहित्यिक स्रोतों पर आधारित मौलिक शोध-निबंधों के प्रकाशन का प्रमुख मंच बना, जिसने बिहार-क्षेत्र (विशेषतः मगध साम्राज्य) से संबंधित प्राचीन इतिहास की अनेक रिक्तियों को भरने में सहायता की।

8.2 पटना संग्रहालय (1917)

पटना संग्रहालय की स्थापना पटना एवं आसपास प्राप्त ऐतिहासिक वस्तुओं के संकलन एवं संरक्षण हेतु हुई थी और यह मुग़ल-राजपूत वास्तुशैली में निर्मित है (विकिपीडिया हिंदी, 2024क)। यह संग्रहालय केवल वस्तु-संकलन का स्थान न होकर प्राचीन भारतीय इतिहास के भौतिक साक्ष्यों—मूर्तियों, अभिलेखों तथा मुद्राओं—के व्यवस्थित अध्ययन का केंद्र भी बना। इसी संग्रहालय में 1963 से 1972 तक अध्यक्ष रहे प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री परमेश्वरी लाल गुप्त ने प्राचीन भारतीय मुद्राओं, विशेषतः पंच-चिह्नित सिक्कों (punch-marked coins) के अध्ययन को नई वैज्ञानिक दिशा दी (विकिपीडिया हिंदी, 2020)। गुप्त ने इससे पूर्व वाराणसी के भारत कला भवन (1950-54) तथा मुंबई के प्रिंस ऑफ़ वेल्स संग्रहालय (1955-62) में भी मुद्राशास्त्रीय शोध-कार्य किया था, और प्रोफेसर वासुदेव शरण अग्रवाल के मार्गदर्शन में की गई उनकी डॉक्टरेट शोध-उपाधि (1960) भी पंच-चिह्नित सिक्कों पर केंद्रित थी (विकिपीडिया

हिंदी, बिना तिथि)। पटना संग्रहालय में उनके कार्यकाल ने संग्रहालय को मुद्राशास्त्रीय शोध का एक राष्ट्रीय स्तर का केंद्र बना दिया।

8.3 काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान (1950)

काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान की स्थापना अक्टूबर 1950 में बिहार सरकार द्वारा की गई तथा इसका नामकरण प्रसिद्ध इतिहासकार एवं विधिविद् काशी प्रसाद जायसवाल के सम्मान में किया गया, जिन्होंने प्राचीन भारत के इतिहास, राजनीति, धर्म तथा मुद्रा जैसे विषयों पर महत्त्वपूर्ण शोध-कार्य किया था। संस्थान का उद्देश्य प्राचीन एवं मध्यकालीन बिहार के इतिहास, पुरातत्व, भाषाशास्त्र तथा वस्तु-विज्ञान (material culture) का अध्ययन एवं संरक्षण करना है, और इसमें शोधार्थियों हेतु पुस्तकालय तथा प्राचीन प्रतिमाओं, मुद्राओं व अभिलेखों से युक्त संग्रहालय की सुविधा भी उपलब्ध है (समाज बंधु, 2025)। संस्थान द्वारा 1982 में आरंभ की गई एक महत्त्वपूर्ण व्याख्यानमाला के प्रथम वक्ता प्रख्यात इतिहासकार दिनेश चंद्र सरकार थे, जिन्होंने भारतीय अभिलेखों (एपीग्राफी) पर इंडियन एपीग्राफी नामक चर्चित ग्रंथ की रचना की थी; इसी शृंखला में 1983 में सैयद हसन असकरी ने पटना नगर के इतिहास पर व्याख्यान दिए (कौशिक, 2025)। यह उदाहरण दर्शाता है कि संस्थान ने केवल स्थानीय बिहार-केंद्रित विद्वानों को ही नहीं, अपितु राष्ट्रीय स्तर के अभिलेखशास्त्रियों को भी पटना के बौद्धिक परिवेश से जोड़ा।

8.4 पटना विश्वविद्यालय

पटना विश्वविद्यालय, जो बिहार का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है, जायसवाल के जीवनकाल से ही उनसे और तत्कालीन अन्य इतिहासकारों से संस्थागत रूप से जुड़ा रहा—जायसवाल स्वयं विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य रहे और उन्होंने सीनेट में स्त्रियों के लिए आरक्षण का मुद्दा भी उठाया था (स्त्रीकाल, 2018)। विश्वविद्यालय ने इस प्रकार शोध-संस्थाओं तथा उच्च शिक्षा के मध्य एक सेतु का कार्य किया, यद्यपि इसके प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग की विस्तृत शैक्षणिक गतिविधियों के संबंध में इस अध्ययन हेतु उपयोग किए गए स्रोतों में पर्याप्त विवरण उपलब्ध नहीं हो सका; अतः इस विषय पर निश्चित दावा करने के बजाय इसे भविष्य के शोध हेतु एक रिक्त स्थान के रूप में चिह्नित किया जाता है।

9. उद्देश्य 2 का विश्लेषण: प्रमुख इतिहासकार एवं उनकी पद्धति

9.1 काशी प्रसाद जायसवाल (1881-1937)

काशी प्रसाद जायसवाल का जन्म 27 नवंबर 1881 को हुआ था (जन्मस्थान को लेकर स्रोतों में मिर्जापुर तथा मानभूमि—दोनों नामों का उल्लेख मिलता है, जो एक अपुष्ट तथ्य है) तथा निधन 4 अगस्त 1937 को हुआ। वे भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार, अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातत्वविद् एवं हिंदी साहित्यकार थे (विकिपीडिया हिंदी, 2024क; भारतकोश, बिना तिथि)। वे इतिहास तथा पुरातत्त्व के अतिरिक्त लगभग पैंतीस देशी-विदेशी भाषाओं—ग्रीक, लैटिन, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, चीनी, तमिल, तेलुगु, हिंदी, संस्कृत आदि—के भी जानकार माने जाते थे (शिवहरे वाणी, 2022)। जायसवाल ने बिहार रिसर्च जर्नल तथा 'पाटलिपुत्र' नामक पत्रिकाओं का संपादन किया—'पाटलिपुत्र' पत्रिका पटना से सन् 1914 में प्रकाशित हुई थी, जिसके वे प्रथम संपादक थे (हिन्दवी, बिना तिथि)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद के सहयोग से उन्होंने 'इतिहास परिषद' की भी स्थापना की, और पटना संग्रहालय की स्थापना में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा (भारतकोश, बिना तिथि)।

जायसवाल की सबसे प्रसिद्ध कृतियों में हिंदू पॉलिटी (1918), मनु एंड याज्ञवल्क्य, तथा हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया (150 ईस्वी–350 ईस्वी) (1933) सम्मिलित हैं, जिन्हें प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक साहित्य के क्लासिक ग्रंथों में गिना जाता

है (द प्रिंट हिंदी, 2019)। हिंदू पॉलिटी में उन्होंने यह प्रतिपादित करने का प्रयास किया कि प्रतिनिधित्व एवं सामूहिक निर्णय-प्रक्रिया पर आधारित भारतीय गणतंत्र प्राचीन विश्व के सबसे पुराने एवं शक्तिशाली गणतांत्रिक ढाँचों में से थे। उन्होंने लगभग दो सौ शोध-लेख तथा एक दर्जन से अधिक शोध-ग्रंथों की रचना अथवा संपादन किया, जो उस दौर की प्रमुख पत्रिकाओं—प्रदीप, द मॉडर्न रिव्यू, द जैन एंटीक्वेरी, सरस्वती, एपीग्राफिया इंडिका तथा रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड के जर्नल—में प्रकाशित हुए (थिसडे, बिना तिथि)।

पद्धतिगत दृष्टि से जायसवाल मुख्यतः राजनीतिक एवं राजवंशीय इतिहास लिखते रहे, किंतु उनकी व्याख्याओं में स्पष्ट राष्ट्रवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है, जिसके फलस्वरूप विद्वानों ने उन्हें 'राष्ट्रवादी इतिहासकार' के रूप में चिह्नित किया है (मंडल, 2023; द प्रिंट हिंदी, 2019)। वे हिंदी बोलने वाले स्थानीय पाठकों तथा साहित्यकारों के लिए हिंदी में तथा अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक इतिहासकार-समुदाय के लिए अंग्रेज़ी में—दोनों भाषाओं में लेखन करते थे, जो उनके लेखन की एक विशिष्ट द्विभाषिक प्रकृति को दर्शाता है (द प्रिंट हिंदी, 2019; स्त्रीकाल, 2018)।

9.2 परमेश्वरी लाल गुप्त (मुद्राशास्त्री)

परमेश्वरी लाल गुप्त का मुद्राशास्त्र (numismatics) के क्षेत्र में योगदान पटना के इतिहास-लेखन की एक भिन्न किंतु महत्त्वपूर्ण धारा—अर्थात् साहित्यिक/राजनीतिक इतिहास के स्थान पर वस्तु-आधारित, प्रयोगसिद्ध (empirical) पद्धति—का प्रतिनिधित्व करता है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से परास्नातक करने के पश्चात उन्होंने भारत कला भवन (वाराणसी), प्रिंस ऑफ़ वेल्स संग्रहालय (मुंबई) में कार्य किया तथा 1963 से 1972 तक पटना संग्रहालय के अध्यक्ष रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात नासिक में उन्होंने भारतीय मुद्राशास्त्रीय अध्ययन शोध संस्थान (Indian Institute of Research in Numismatic Studies) की स्थापना की, जो आज एशिया में अपनी तरह की एक विशिष्ट संस्था मानी जाती है (विकिपीडिया हिंदी, 2020)। पाठक तथा अजय मित्र शास्त्री जैसे अन्य विद्वानों के साथ उन्हें प्राचीन भारतीय मुद्राशास्त्रीय अध्ययन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु स्मरण किया जाता है (एग्ज़ॉटिक इंडिया आर्ट, बिना तिथि)। गुप्त का कार्य यह प्रदर्शित करता है कि पटना-केंद्रित इतिहासलेखन केवल साहित्यिक स्रोतों तक सीमित न रहकर मुद्रा एवं अभिलेख जैसे भौतिक-पुरातात्विक साक्ष्यों के वैज्ञानिक विश्लेषण तक भी विस्तृत हुआ।

9.3 राधाकृष्ण चौधरी (मिथिला/बिहार का क्षेत्रीय इतिहासलेखन)

राधाकृष्ण चौधरी (जन्म तिथि को लेकर उपलब्ध स्रोतों में 15 फरवरी 1921 तथा 15 फरवरी 1924—दोनों तिथियों का उल्लेख मिलता है, जो एक अपुष्ट तथ्य है; मृत्यु 15 मार्च 1985) बिहार, विशेषतः मिथिला के इतिहास के एक प्रमुख इतिहासकार, विचारक एवं साहित्यकार माने जाते हैं। उन्होंने बिहार की ऐतिहासिकता, विशेषतः मिथिला के विशिष्ट इतिहास पर सूक्ष्म ढंग से शोध कर मैथिली भाषा में अनेक ग्रंथ प्रकाशित करवाए तथा गणेश दत्त महाविद्यालय, बेगूसराय में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे (मैथिली जिंदाबाद, 2017, 2024)। चौधरी का इतिहासलेखन इस बात का उदाहरण है कि पटना-केंद्रित संस्थागत ढाँचे के समानांतर बिहार में क्षेत्रीय-भाषिक (मैथिली/हिंदी) इतिहासलेखन की एक स्वतंत्र किंतु समृद्ध परंपरा भी विकसित हुई, जिसने मिथिला के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास की रिक्तियों को भरने का कार्य किया।

9.4 सैयद हसन असकरी (मध्यकालीन विस्तार)

यद्यपि सैयद हसन असकरी (10 अप्रैल 1901 – 28 नवंबर 1990) मुख्यतः मध्यकालीन भारत, विशेषतः मध्यकालीन बिहार के विशेषज्ञ इतिहासकार थे—अतः इस शोध पत्र के मुख्य विषय 'प्राचीन' भारतीय इतिहास-लेखन से उनका संबंध सीधा नहीं, बल्कि परोक्ष है तथापि उनका उल्लेख इसलिए आवश्यक है क्योंकि पटना नगर का इतिहास स्वयं

उनका प्रिय विषय रहा और उन्होंने काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान की व्याख्यानमाला में पटना के विभिन्न इलाक़ों तथा उनके नामों की व्युत्पत्ति पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला (कौशिक, 2025)। असकरी का उदाहरण यह दर्शाता है कि पटना की संस्थाओं ने प्राचीन इतिहास के साथ-साथ मध्यकालीन इतिहासलेखन की परंपरा को भी संस्थागत मंच प्रदान किया, जिससे नगर की समग्र ऐतिहासिक चेतना का निर्माण हुआ।

9.5 दिनेश चंद्र सरकार एवं अभिलेखशास्त्रीय परंपरा

दिनेश चंद्र सरकार पटना के स्थायी निवासी अथवा वहाँ की किसी संस्था में स्थायी रूप से कार्यरत इतिहासकार नहीं थे, इसलिए उन्हें 'पटना के इतिहासकार' के रूप में वर्गीकृत करना उचित नहीं होगा; तथापि काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान की 1982 में आरंभ हुई व्याख्यानमाला के प्रथम वक्ता के रूप में उनकी भूमिका यह दर्शाती है कि पटना की संस्थाएँ राष्ट्रीय स्तर के अभिलेखशास्त्रियों (एपीग्राफिस्ट) को भी अपने बौद्धिक नेटवर्क से जोड़ती थीं। सरकार भारतीय अभिलेखों पर लिखी अपनी चर्चित पुस्तक इंडियन एपीग्राफी के लिए जाने जाते हैं (कौशिक, 2025)। यह संबंध अभिलेखशास्त्र और पटना-केंद्रित संस्थाओं के बीच के अंतर्संबंध को उजागर करता है, जो जायसवाल की मूल परंपरा से ही जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

10. समालोचनात्मक विवेचन (उद्देश्य 2 का सारांशात्मक मूल्यांकन)

उपर्युक्त विश्लेषण से पटना-केंद्रित इतिहासलेखन में कम-से-कम चार प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से रेखांकित की जा सकती हैं। प्रथम, राष्ट्रवादी-वैचारिक धारा, जिसका सर्वाधिक प्रतिनिधित्व काशी प्रसाद जायसवाल करते हैं, जिनके ऐतिहासिक चिंतन में राष्ट्रीय आंदोलन का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है (मंडल, 2023)। द्वितीय, प्रयोगसिद्ध/वस्तु-आधारित धारा, जिसका प्रतिनिधित्व परमेश्वरी लाल गुप्त के मुद्राशास्त्रीय शोध-कार्य तथा दिनेश चंद्र सरकार के अभिलेखशास्त्रीय अध्ययन से होता है, जो अपेक्षाकृत अधिक वस्तुनिष्ठ एवं तकनीकी पद्धति पर आधारित रही। तृतीय, संस्था-निर्माण की धारा, जो बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी, पटना संग्रहालय तथा काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान जैसी स्थायी संस्थाओं के निर्माण में परिलक्षित होती है, जिन्होंने व्यक्तिगत विद्वत्ता को संस्थागत निरंतरता में परिवर्तित किया। चतुर्थ, क्षेत्रीय-भाषिक धारा, जिसका प्रतिनिधित्व राधाकृष्ण चौधरी के मैथिली/हिंदी लेखन से होता है, जिसने बिहार के भीतर मिथिला-केंद्रित एक समानांतर ऐतिहासिक चेतना का निर्माण किया।

इसके साथ ही इस परंपरा की कुछ महत्त्वपूर्ण सीमाएँ भी उजागर होती हैं। सबसे पहले, प्रारंभिक दौर का इतिहासलेखन प्रायः राजनीतिक-वंशीय इतिहास पर केंद्रित रहा, जबकि सामाजिक-आर्थिक इतिहास तथा जनसामान्य के जीवन को अपेक्षाकृत कम स्थान मिला। दूसरे, संस्थागत ढाँचे में स्त्रियों के प्रतिनिधित्व का प्रश्न लंबे समय तक हाशिए पर रहा—यद्यपि जायसवाल ने स्वयं पटना विश्वविद्यालय की सीनेट में स्त्रियों के लिए आरक्षण का मुद्दा उठाया था, किंतु समग्र संस्थागत संस्कृति में स्त्री-इतिहासकारों अथवा स्त्री-दृष्टिकोण की उपस्थिति सीमित ही रही, जैसा कि स्त्रीकाल के स्त्रीवादी पुनरावलोकन में रेखांकित किया गया है (स्त्रीकाल, 2018)। तीसरे, राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के प्रभाव के कारण कहीं-कहीं ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता और वैचारिक व्याख्या के बीच तनाव भी दिखाई देता है, जिसकी ओर स्वयं मंडल (2023) संकेत करते हैं।

11. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पटना, पाटलिपुत्र के प्राचीन ऐतिहासिक गौरव तथा बीसवीं शताब्दी में विकसित संस्थागत ढाँचे के संयोग से भारतीय प्राचीन इतिहास-लेखन का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय केंद्र बनकर उभरा। बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी, पटना संग्रहालय तथा काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान जैसी संस्थाओं ने न केवल स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के विद्वानों को एक मंच प्रदान किया (उद्देश्य 1)। काशी

प्रसाद जायसवाल, परमेश्वरी लाल गुप्त, राधाकृष्ण चौधरी तथा सैयद हसन असकरी जैसे विद्वानों ने राष्ट्रवादी चेतना, प्रयोगसिद्ध मुद्राशास्त्रीय/अभिलेखशास्त्रीय पद्धति तथा क्षेत्रीय-भाषिक परंपरा के समन्वय से प्राचीन भारतीय इतिहास की समझ को समृद्ध किया, यद्यपि इस परंपरा में राजनीतिक-वंशीय इतिहास पर अत्यधिक बल तथा स्त्री-दृष्टिकोण की सीमित उपस्थिति जैसी उल्लेखनीय सीमाएँ भी विद्यमान रहीं (उद्देश्य 2)। कुल मिलाकर, पटना का योगदान भारतीय इतिहासलेखन के राष्ट्रीय परिदृश्य में एक विशिष्ट, संस्थागत रूप से सुदृढ़ तथा वैचारिक रूप से बहुस्तरीय क्षेत्रीय परंपरा के रूप में रेखांकित किया जा सकता है।

12. सीमाएँ एवं भविष्य के शोध हेतु सुझाव

इस अध्ययन की सबसे महत्त्वपूर्ण सीमा यह है कि यह मुख्यतः द्वितीयक एवं तृतीयक वेब-आधारित स्रोतों (जीवनीपरक लेख, विश्वकोशीय प्रविष्टियाँ तथा वेब-पत्रिकाओं के निबंध) पर आधारित है; बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी जर्नल के मूल अंकों, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के अभिलेखागार अथवा पटना विश्वविद्यालय के संस्थागत दस्तावेज़ों जैसे प्राथमिक स्रोतों तक प्रत्यक्ष पहुँच इस अध्ययन में संभव नहीं हो सकी। इसी कारण जायसवाल एवं चौधरी के जन्म-वर्ष जैसे कुछ तथ्यों में स्रोत-भेद भी सामने आया, जिन्हें स्पष्ट रूप से अपुष्ट के रूप में चिह्नित किया गया है। दूसरे, बी.पी. सिन्हा, पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के अन्य विद्वानों, तथा अजय मित्र शास्त्री जैसे संभावित रूप से प्रासंगिक इतिहासकारों के विषय में पर्याप्त प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध न होने के कारण उन्हें इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया जा सका।

भविष्य के शोध हेतु यह सुझाव दिया जाता है कि (क) काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान तथा बिहार एवं उड़ीसा शोध सोसायटी के मूल अभिलेखागार एवं जर्नल-अंकों का प्रत्यक्ष अध्ययन किया जाए; (ख) पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के संस्थागत इतिहास पर पृथक शोध किया जाए; (ग) पटना-केंद्रित इतिहासलेखन में स्त्री-इतिहासकारों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति का विस्तृत नारीवादी विश्लेषण प्रस्तुत किया जाए; तथा (घ) स्वतंत्रता-पूर्व एवं स्वतंत्रता-पश्चात के कालखंडों में पटना के इतिहासलेखन की निरंतरता एवं परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।

संदर्भ सूची

कौशिक, शुभनीत. (2025). सैयद हसन असकरी और उनका इतिहासलेखन. समालोचन. https://samalochan.com/syed-hasan-askari/

थिसडे. (बिना तिथि). काशी प्रसाद जायसवाल, एक राष्ट्रवादी इतिहासकार. https://www.thisday.app/story/काशी-प्रसाद-जायसवाल-एक-राष्ट्रवादी-इतिहासकार-28483

द एग्ज़ामपिलर. (2020). बिहार के प्रमुख संग्रहालय. https://theexampillar.com/major-museums-of-bihar

द एग्ज़ॉटिक इंडिया आर्ट. (बिना तिथि). प्राचीन भारतीय मुद्रा-शास्त्रीय अध्ययन. https://www.exoticindiaart.com/book/details/ancient-indian-numismatics-study-hbf585/

द प्रिंट हिंदी. (2019). सामाजिक भेदभाव के शिकार बन गए भारत के पहले राष्ट्रवादी इतिहासकार. https://hindi.theprint.in/opinion/indias-first-nationalist-historian-became-victim-of-social-discrimination/77775/

पटना ज़िला प्रशासन, बिहार सरकार. (2026). इतिहास. https://patna.nic.in/history/

भारतकोश. (बिना तिथि). काशी प्रसाद जायसवाल. https://bharatdiscovery.org/india/काशी_प्रसाद_जायसवाल

मंडल, कृष्ण कुमार. (2023). डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल की इतिहास दृष्टि. समालोचन. https://samalochan.com/kashi-prasad-jayaswal/

मैथिली जिंदाबाद. (2017). मिथिलापुत्र राधाकृष्ण चौधरीः एसिया महादेशक नामी इतिहासकार मध्य एक चर्चित हस्ताक्षर. https://maithilijindabaad.com/?p=8351

मैथिली जिंदाबाद. (2024). अपन महान विभूति कैं चिन्हू - राधाकृष्ण चौधरी. https://maithilijindabaad.com/?p=22982

लाइव आर्यावर्त. (2023). विशेषः डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल का सपना था 'हिन्दू राष्ट्र'. https://www.liveaaryaavart.com/2023/08/blog-post_655.html

विकिपीडिया हिंदी. (2020). परमेश्वरीलाल गुप्त. https://hi.wikipedia.org/wiki/ परमेश्वरीलाल_गुप्त

विकिपीडिया हिंदी. (2024क). पटना संग्रहालय. https://hi.wikipedia.org/wiki/ पटना_संग्रहालय

विकिपीडिया हिंदी. (2024ख). काशीप्रसाद जायसवाल. https://hi.wikipedia.org/wiki/काशीप्रसाद_जायसवाल

विकिपीडिया हिंदी. (बिना तिथि). सदस्य:Anamdas/परमेश्वरी लाल गुप्ता. https://hi.wikipedia.org/wiki/सदस्य:Anamdas/ परमेश्वरी_लाल_गुप्ता

शिवहरे वाणी. (2022). अखंड भारत के महामानव थे डा. काशीप्रसाद जायसवाल; पुण्यतिथि पर विशेष. https://www.shivharevaani.com/post/dr-kashiprasad-jaiswal-was-the-great-man-of-akhand-bharat-special-on-death-anniversary

समाज बंधु. (2025). काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान. https://www.samajbandhu.com/jagran/4523-2/

स्त्रीकाल. (2018). 'राष्ट्रवादी' इतिहासकार काशी प्रसाद जायसवालः एक स्त्रीवादी अवलोकन. https://streekaal.com/2018/02/19/feminist-reading-of-kp-jaiswa/